IB DIPLOMA PROGRAMME
PROGRAMME DU DIPLÔME DU BI
PROGRAMA DEL DIPLOMA DEL BI

M07/1/A1HIN/HP1/HIN/TZ0/XX

22070129

HINDI A1 – HIGHER LEVEL – PAPER 1
HINDI A1 – NIVEAU SUPÉRIEUR – ÉPREUVE 1
HINDI A1 – NIVEL SUPERIOR – PRUEBA 1

Monday 14 May 2007 (morning)
Lundi 14 mai 2007 (matin)
Lunes 14 de mayo de 2007 (mañana)

2 hours / 2 heures / 2 horas

INSTRUCTIONS TO CANDIDATES

- Do not open this examination paper until instructed to do so.
- Write a commentary on one passage only.

INSTRUCTIONS DESTINÉES AUX CANDIDATS

- N’ouvrez pas cette épreuve avant d’y être autorisé(e).
- Rédigez un commentaire sur un seul des passages.

INSTRUCCIONES PARA LOS ALUMNOS

- No abra esta prueba hasta que se lo autoricen.
- Escriba un comentario sobre un solo fragmento.

© IBO 2007

नीचे दो उद्धरण दिए गए हैं, (क) तथा (ख)। इन दोनों में से किसी एक पर व्याख्या लिखिए।

1. (क)

छाती में घुटते गर्म धुएँ का गुबार जब धीरे-धीरे छाती से उठकर मेरे गले में आ अटका, तो मेरा लेटे रहना मुश्किल हो गया। खाँसते- खाँसते मेरा चेहरा लाल हो गया। मेरी लगातार खों -खों छाती में अटके उस बलगम को निकालने का प्रयत्न कर रही थी, जो छाती में जोंक की तरह चिपका था। वह बलगम तो नहीं निकला, हाँ खून की कुछ बूंदे जरूर बिस्तर पर आ गिरीं। मेरे पास बैठी मधु जो अभी तक अपने आप को रोके थी, बिस्तर पर गिरी खून की बूँदे देखते ही बदहवास- सी हो गई फिर दौड़ कर ड्यूटी रूम की तरफ डाक्टर को बुलाने चली गई। जब तक मधु वार्ड में लौटी खाँसी का दौरा ठंडा पड़ गया था। मैं जानता हूँ जब तक मधु की साँस चलती है वह मुझे बचाने का हर संभव प्रयास करेगी, लेकिन अब उसकी मेहनत रंग नहीं लाएगी। मैने खुद ही डॉक्टरों के आगे हाथ जोड़कर मधु को अंधेरे में रखने की विनती की है। मैं चाहता हूँ कि अन्तिम क्षण तक उसके हृदय में मेरे पूर्ण स्वस्थ हो जाने की ज्योति जगमगाती रहे। डॉक्टर चला गया है, सुनसान वार्ड में जाते हुए डॉक्टर के कदमों की पदचाप मैं दूर तक सुनता रहा हूँ, अगर नहीं सुन पाया तो केवल मधु की बात। वह खामोश है पर उसके शब्द मेरे कानों में गूँज रहे हैं जिन्हें वह कभी गुस्से से, कभी प्यार से, कभी खीज कर, कभी झगड़ कर, कभी मँहगाई का रोना रोकर, कभी मेरी सेहत और कभी संभावित दुर्घटना के ख्याल से मुझे नशा करने से रोका करती थी। मैं उसकी पीड़ा को तब नहीं समझता था आज महसूस करता हूँ। मुझे आज भी वह दिन याद है जब स्थानीय महिला कालेज में प्रवक्ता पद की कुछ नियुक्तियाँ होनी थी। उस दिन उसकी महत्वाकांक्षी इच्छा ने मेरे सामने लगभग गिड़गिड़ा कर कहा था। अगर तुम..... । तुम्हें कोई कमी है जो तुम नौकरी करोगी? मैंने उसे पस्त कर दिया था। क्या दुनियाभर की औरतें घर में बोर ही होती हैं? वे अपने बाल बच्चों में व्यस्त रहती हैं, मैं भला किसमें। मैं जानता था उसे बच्चे न होने का दुःख मुझसे ज्यादा था, यह समस्या हम दोनों में से न जाने किसकी कमी के कारण हमारे बीच खड़ी थी। पर इसका दोषी हमेशा मधु को ही ठहराया गया। मेरा परिवार, मेरे पड़ोसी, मेरे मित्र सभी मधु को बंध्या कहते थे। मैं भी इसका अपवाद नहीं था। मैंने भी यह दोष मधु पर डाला। सुबह नींद खुली, डाक्टरों का एक दल वार्ड में पसरा हुआ था। मैंने साहस बटोर कर मधु को पुकारा पर जीभ ने मेरा साथ नहीं दिया। तो क्या अब मैं सिर्फ देख- सुन सकूँगा, बोल नहीं पाऊँगा। ओह! तभी मुझे सामने से हेड नर्स आती दिखाई दी। उसने कहा- तुम बहुत हिम्मतवाली है। आज डॉक्टर ने तुम्हारे मरीज का छुट्टी कर दिया। अब इसे घर में आराम करने का है। आज महीनों बाद मैं अस्पताल से निकला। मैंने सोचा -अच्छा ही हुआ। एक के बाद एक दिन बीत रहा है। करवट बदलने भर की शक्ति देह में नहीं बची है। दवाइयों के लगातार सेवन के बावजूद मैं दिन पर दिन ढल रहा था। एक सुबह उस समय मेरे कान चौकन्ने हो उठे जब मैंने अपनी चल –अचल सम्पत्ति, मकान, बैंक बैलेंस और घरेलू सामान को लेकर अपने माता -पिता में हो रही मंत्रणा को सुना। मधु डॉक्टर से राय लेने अस्पताल गई थी। मधु जब अस्पताल से लौटी तो बदहवास- सी थी। वह मेरे पास आने को आतुर थी पर मेरे पिता हटने का नाम ही नहीं ले रहे थे। मैं मधु से सिर्फ इतना ही कहना चाह रहा थाकि मधु ये घर, ये मकान तुम्हारा है... मेरा बैंक बैलेंस। । मेरे शेयर ...तुम्हारे हैं..... मैं जीकर भी तुम्हारा था... । मैं मरकर भी तुम्हारा रहूँगा। पर मेरी जीभ मेरा साथ नहीं दे रही थी, मैं मधु को कोई सांत्वना नहीं दे पा रहा था।

वे क्षण. डॉ0 दीपा त्यागी नवनीत अक्तूबर 1990

1. (ख)

बच्चा और झुनझुना

हर तरफ तोपें गरज रही हैं और फूट रहे हैं बम,
बारूद की महक से परिचित होने लगी है दुनिया,
ठीक इसी समय सारी बुरी खरोंचों और हतप्रभ दरारों से दूर,
अपने निश्चल भोलेपन में झुनझुने से खेल रहा एक बच्चा।
उसे पता नहीं कोई बात और है जो उसके भविष्य से खेल रही है,
और ठीक उसके झूले के आसपास पनप रहा एक षड़यंत्र।
एक चौकस और दुनियादार निगाह,
बदलना चाहती है उसके झुनझुने की आवाज,
वह लोरी की जगह मर्सिया जैसी कोई
बेवजह सी चीज रखना चाहती है।
फिर भी झुनझुने की आवाज से आश्वस्त है-
बाकी बची हुई दुनिया,
क्योंकि दुनिया का सबसे भरोसेमंद सपना है बच्चा।
बच्चे के लिए बम तोप की गरज,
सिर्फ खेल-खेल में पैदा की गई मजेदार आवाज ही हो सकती है।
यह अलग बात है कि उससे वह झुनझुने का काम नहीं ले सकता।
इस समय दुनिया में और बहुत सारा काम हो रहा है
मगर बचपन के गलियारे में,
इतना मुकम्मल धोखा नहीं रचा जा सकता।
जिसे एक चौकस निगाह बम और बंदूक की
शक्ल में संजो रही है।
झुनझुना इसमें क्या कर सकता है भला ?
वह सरहद पर लड़ नहीं सकता
वह बम की तरह दग नहीं सकता
बस अपनी ईश्वरीय झनक में बच्चे को डुबोये रह सकता है।
आप विश्वास करें चाहे न करें
यह तय है कि एक दिन इन्हीं बमों, बंदूकों और तोपों के बीच
जब झुनझुने की आवाज दब जाएगी
बच्चा अपने आसपास का खेल समझने लगेगा।
वर्णमाला के सारे अक्षर उस समय
अपने अर्थ पूरी निर्ममता से उसके सामने खोलकर रख देंगे।

यतीन्द्र मिश्र, वागर्थ , मार्च २००७